

## स्त्री विमर्श एवं भारतीय संविधान

डॉ. इशरत परवीन  
शहडोल (म.प्र)

सारांश:- स्त्री विमर्श समाज में स्त्री की स्थिति अधिकार, असामनता, शोषण तथा सशक्तिकरण से जुड़ा वैचारिक आनंदोलन है। भारतीय संविधान ने स्त्री को समान नागरिक के रूप स्थापित करने का प्रयास किया है। इस दृष्टी से स्त्री विमर्श और संविधान का गहरा सबंध है। समाज, साहित्य, राजनीतिक और सांस्कृति में महिलाओं की स्थिति, अधिकार, अनुभव, और असमानताओं पर विचार चर्चा। यह केवल महिलाओं की समस्या का वर्णन नहीं, बल्कि समानता, गरिमा और न्याय की मांग का बौद्धिक आनंदोलन है। स्त्री-विमर्श शब्द स्त्री का अर्थ- नारी तथा विमर्श का अर्थ है- गहन चर्चा, विचार-विश्लेषण एवं तर्कपूर्ण संवाद चिंतन से जुड़ा है। हम यह कह सकते की की स्त्री विमर्श का अर्थ- स्त्री के जीवन, स्थिति, असमानता और स्वतन्त्रता से जुड़े प्रश्नों पर गंभीर वैचारिक चर्चा। स्त्री विमर्श की अवधारणा का विकास आधुनिक काल में नारी अधिकार आनंदोलनों और नारीवादी भारत में स्त्री विमर्श का आरम्भ सामाजिक सुधार आनंदोलनों से जुड़ा है। राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के विरोध और स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। सावित्रीबाई फुले स्त्री शिक्षा की सबसे पहली बड़ी प्रवर्तक है, भारतीय संविधान ने स्त्री अधिकारों की रक्षा के लिए मजबूत कानूनी आधार प्रदान किया है। स्त्री विमर्श का मूल उद्देश्य यह समझना है कि स्त्री केवल जैविक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में किया जाए। लम्बे समये तक समाज ने स्त्री की भूमिका को घर, परिवार और सेवा तक सीमित रखा। शिक्षा, संपत्ति, निर्णय और अभिव्यक्ति के अधिकार से उसे वंचित किया गया। ऐसे में स्त्री ने प्रश्न उठाया कि क्या स्त्री का जीवन केवल संबंधों से परिभ्रष्ट है? हिंदी साहित्य में भी स्त्री विमर्श ने महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, अनेक लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री के भीतर की संवेदना, संघर्ष, पीड़ा, त्याग, को साहित्य के माध्यम से आम लोगों को सोचने पर मजबूर किया। कहानियों, उपन्यासों, नाटक, कविताओं के माध्यम से जन जन तक पहुंचाया। आज पुरे समाज को जागरूक होने की जरूरत है, जब स्त्री सशक्त होगी, तभी समाज का वास्तव में विकाश

होगा। जब स्त्री अकेले निडर होकर अपने लिए फैसले ले पायेगी, तभी हमारा समाज समानता का एक मिशाल बनेगा।

बीज शब्द :- स्त्री विमर्श, संविधान, सशक्तिकरण, पितृसत्ता, चेतना, चुनौतियाँ, अस्मिता, रुद्धियाँ, अशिक्षा

भूमिका:-

स्त्री विमर्श केवल साहित्य अवधारणा नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का बौद्धिक आनंदोलन है। इसका उद्देश्य महिलाओं के प्रति स्थापित रुद्धियों, भैदभाव और असमानताओं को चुनौती देना है। भारतीय समाज में स्त्रियों की भूमिका परंपरागत रूप से सीमित रही, परन्तु आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार आनंदोलनों और संवैधानिक प्रावधानों ने उनकी स्थिति में परिवर्तन लाया। स्त्री को एक स्वतंत्र, सोचने-समझने वाली और निर्णय लेने वाली व्यक्तित्व रूप में स्थापित करना है, स्त्री विमर्श का एक महत्वपूर्ण पहलू समानता का प्रश्न है। यह पुरुष विरोधी नहीं, बल्कि असमानता विरोधी है। इश्क उद्देश्य समाज में स्त्री और पुरुष के बीच समान अवसर, समान सम्मान और समान अधिकार सुनिश्चित करना है। स्त्री विमर्श यह भी स्पस्ट करता है कि स्त्री को केवल परिवार की भूमिका तक सीमित करना उसके व्यक्तित्व के साथ अन्याय है। उसे अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार जीवन जीने का अधिकार है। आज के समय में स्त्री विमर्श और भी व्यापक हो गया है। इसमें केवल शहरी शिक्षित स्त्रियों की नहीं, बल्कि ग्रामीण, दलित, आदिवासी और श्रमिक वर्ग की महिलाओं के प्रश्न भी शामिल हैं। यह विविध स्त्री अनुभव को पहचानने और उन्हें आवाज देने का प्रयास है।

शिक्षा कानून और सामाजिक अंदोलनों में स्त्रियों की स्थिति में सुधार किया है, फिर भी मानसिकता में परिवर्तन अभी भी आवश्यक है आज भी स्त्री सुरक्षा पर सवाल है, आज भी महिलाओं के साथ कई अपराध हो रहे हैं इसकी वजह अशिक्षा, गलत सामाजिक सोच, लैंगिक भेदभाव, कानूनी जानकारी का आभाव और नैतिक मूल्यों की कमी प्रमुख कारण है। कई बार महिलाएं बार डर या बदनामी के कारण शिकायत दर्ज नहीं करती, जिससे अपराधियों का मनोबल बढ़ता है। स्त्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समाज और सरकार दोनों को मिलकर कार्य करना होगा।

भारतीय समाज में स्त्री की ऐतिहासिक स्थिति भारतीय समाज में स्त्री की स्तिथि समय के साथ बदलती रही है :

- \* वैदिक काल में अपेक्षाकृत सम्मानजनक स्थिति
- \* मध्यकाल में सामाजिक प्रतिबंधों की वृद्धि
- \* औपनिवेशिक काल में सुधार आनंदोलनों का आरम्भ
- \* आधुनिक काल में शिक्षा और कानून द्वारा अधिकार विस्तार

स्त्री विमर्श की आवधारना:

स्त्री विमर्श का उद्देश्य पितृसतात्मक व्यवस्था में स्त्री की आवाज के पहचान दिलाना है। इसमें

#### लैंगिक समानता

शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार हिंसा और शोषण के विरुद्ध संघर्ष निर्णय-प्रक्रिया में भागीदारी जैसे मुद्रे शामिल हैं। स्त्री विमर्श पितृसत्ता, सामाजिक नियंत्रण और सांस्कृतिक रुद्धियों की आलोचना करता है।

भारतीय संविधान और स्त्री अधिकार :-

भारतीय संविधान में स्त्री पुरुष समानता का अधिकार देता है -

समानता का अधिकार:-

- \* अनुकूल 14 कानून के समक्ष समानता
- \* अनुकूल 15 (१) - लिंग के आधार पर भेदभाव निषेध

\* अनुकूल 15 (३)- महिलाओं के लिए विशेष प्रावधान अवसर की समानता :

अनुकूल 16- सरकारी नौकरी में अवसर की समानता (ख) स्वतन्त्रता का अधिकार:-

\* अनुकूल 19 - अभिव्यक्ति व आवागमन की स्वतन्त्रता

\* अनुकूल 21 - जीवन और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अधिकार

\* अनुकूल 23- मानव तस्करी और जबरन श्रम पर प्रतिबन्ध

(ग) सामाजिक न्याय

\* अनुकूल 39(क)- सामान कार्य के लिए समान वेतन

\* अनुकूल 42- मातृत्व संरक्षण

(घ) राजनीतिक सशक्तिकरण:-

\* अनुकूल 325-326 सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार स्त्रियों को मतदान का समान अधिकार

\* 73वा और 74वा संविधान संसोधन - पंचायतों व नगर निकायों में महिलाओं को 33% आरक्षण (कई राज्यों में 50%)

\* चुनाव लड़ने का अधिकार

(इ) सामाजिक न्याय और संरक्षण :-

\* घरेलू निषेध अधिनियम घरेलू हिंसा से संरक्षण

\* कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न से संरक्षण

स्त्री विमर्श और संवैधानिक यथार्थ :- संविधान स्त्री को अधिकार देता है; पर व्यव्हार में पितृसत्ता, अशिक्षा, गरीबी, और सामाजिक रुद्धियाँ बाधा बनती हैं। यहीं स्त्री विमर्श की भूमिका महत्वापूर्ण हो जाती है, जो संवैधानिक अधिकारों को सामाजिक चेतना में बदलने का कार्य करती है।

\* समकालीन चुनौतियाँ

\* सामाजिक मानसिकता

\* घरेलू हिंसा

\* कार्य स्थल पर भेदभाव

\* बाल विवाह भ्रूण हत्या

\* आर्थिक असामनता

\* महिलाओं की असुरक्षा

\* डिजिटल सुरक्षा

इन समस्यों का समाधान संवैधानिक कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन और स्त्री - चेतना के विस्तार से संभव हैं।

#### निष्कर्ष:-

स्त्री विमर्श और भारतीय संविधान एक दुसरे के पूरक हैं। स्त्री विमर्श वैचारिक आधार देता है और संविधान कानूनी शक्ति | वास्तविक सशक्तिकरण के लिए आवश्यक हैं की संवैधानिक अधिकारों का सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन, सिक्षा और जागरूकता अनिवार्य हैं, जन संवैधानिक अधिकार और सामाजिक चेतना साथ चलेंगे, तभी स्त्री समानता का लक्ष्य पूर्ण होगा। स्त्री विमर्श का मूल उद्देश्य समाज में स्त्री की असमान स्थिति को पहचानना, उसके अधिकारों को स्थापित करना और उसे समान अवसर दिलाना है। यह केवल महिलाओं की समस्याओं का वर्णन नहीं करता, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक संरचनाओं की आलोचनात्मक समीक्षा भी करता है। स्त्री विमर्श यह स्पष्ट करता है कि लैंगिक समानता के बिना किसी भी समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। इसलिए अवश्यक है कि शिक्षा, कानून, साहित्य और सामाजिक व्यवहार - सभी के स्तरों पर स्त्री को सम्मान, सुरक्षा और समान भागीदारी दी जाए। अंततः स्त्री विमर्श मानवता, न्याय और समानता की स्थापना का आनंदोलन है।

#### सन्दर्भ ग्रन्थ :-

- [1] भारतीय संविधान के अनुच्छेद
- [2] \*स्त्री अध्ययन सम्बन्धी हिंदी आलोचना ग्रन्थ
- [3] जेंडर स्टडीज शोध लेख
- [4] \*महिला अधिकार सम्बन्धी सरकारी नीतियाँ

स्त्री